International Journal of Scientific Research in Engineering and Management (IJSREM)
Volume: 10 Issue: 03 | March - 2026 SJIF Rating: 8.659 ISSN: 2582-3930

संस्कृत साहित्य में वर्णित नैतिक मूल्य

प्रो. टेपसिंह मेरावी सहायक प्राध्यापक,(संस्कृत विभाग)

जयवंती हाक्सर षास.स्नातकोत्तर महाविद्यालय बैतूल (म.प्र.)

सारांषः- प्रस्तुत षोधपत्र संस्कृत साहित्य में वर्णित नैतिक मूल्य से संबंधित है, संस्कृत साहित्य में ऐसे अनेक ग्रन्थ हुए जैसे रामायण,महाभारत,मनुस्मृति,याज्ञवल्क्यस्मृति,श्रीमदभगवतगीता,पंचतंत्र, हितोपदेश,नीतिशतक जिनमंे धर्माचरण,सत्यवचन,परोपकार,दानषीलता,दया,निष्काम,सेवा,त्याग,षांति ,अहिंसा,सौहार्द की भावना,करणीय,अकरणीय बोध इत्यादि का महत्व दिया गया है। नैतिक मूल्य व्यक्ति का आन्तरिक गुण है,आत्मिक बल है,नैतिकता ही व्यक्ति को सामाजिक विकास और उन्नयन के लिए प्रेरित करती है,जिसमें समाज में सुख षांति और व्यवस्था की स्थापना होती है। संस्कृत साहित्य में भौतिकता से ज्यादा महत्व भारत वसुन्धरा में आध्यात्मिक तथा नैकितता को दिया गया है।संस्कृत साहित्य में षील को सर्वश्रेष्ठ मानव मूल्य मानते हुए पुरूषार्थ पर बल दिया गया है।

प्रस्तावनाः- प्रत्येक विशय का साहित्य मानवीय मूल्यों की पाठषाला होता है,कारण यह है कि साहित्य में वर्णित महान व्यक्तियों के कार्य व्यवहार और आचरण जीवन में ऐसे मूल्य स्थापित कर जाते हैं जिन पर चलकर समाज और भावी नागरीक अपने जीवन को सुखी और सफल बना लेते है, ऐसे षील,सदाचारी व्यक्ति ही समाज में प्रेणता कहलाते है। प्राचीन समय से ही विद्वान ऋषि मुनि उन सिध्दांतों की खोज करते रहें हैं जिनसे जीवन आनन्द पूर्वक व्यतीत किया जा सके। उन्होने जितने भी सिध्दांत तथा नियमों का निर्माण किया,वे उनके जीवन के अनुभवों के निचोड़ हैं। जीवन के मूल्य को उन्होने भलीभांति समझा है। संस्कृत साहित्य जीवन के मूल्यों को समझने का अथाह समुद्र है।

वेदों में नैतिक विचार:-नैतिक विचार वेदों में ऋत एवं सत्य के रूप में दृष्टिगत होता है।क्योंकि ऋत और सत्य ही आदर्षों का मूल आधार है ऋत का तात्पर्य-सुव्यवस्थित नियमन अथवा व्यवस्था करना। ऋत को सत्य का उद्भूत कर्ता माना गया है।ऋत और सत्य एक-दूसरे से अन्योन्याश्रित है। ऋत से ही विष्व का नियमन,संचालन,यज्ञ विधि विधान,नैतिक आचरण की विधि और पालन सम्यकतया गतिमान और सुव्यवस्थित होतें है।मानव जीवन का प्रेरित करने वाले जो भी नैतिक आदर्ष स्वीकृत है,उनका आधार ऋत और सत्य है। ऋत के अनुकूल एवं प्रतिकूल मानव आचरण को विभक्त करने का प्रयास भी ऋग्वेद में दृष्टिगत होती है। ऋग्वेद में प्रकाश,ज्ञान,दया, दान,आदि नैतिक गुणांेें के अधिष्ठान है।ऋग्वेद में कुछ देवों का अधिष्ठान नैतिक देव के रूप में स्वीकृत किया गया है। उनमें से वरूण प्रमूख नैतिक व्यवस्था के स्वामी हैं। वे ऋत के अवलम्बन और उसके उद्गम है। वरूण के धर्म धामन और व्रत से सम्पूर्ण नैतिक जीवन आच्छादित है।वरूण की इच्छाओं का अतिक्रमण करना पाप तथा अपराध की कोटि में अधिष्ठत करना है।

नैतिक देव के रूप में मित्र का भी परिगणन किया गया है। मित्र विविध रूपों में मानवीय कृत्यों का निरीक्षण करते है।वे व्यक्ति के बहुविध व्यवहार में सत्यभाशण ,सौहार्द,ईमानदारी का निरीक्षण करतें है।मित्र सत्य और मानव सम्बंधों का रक्षक है।मित्र और

वरूण के समान अग्नि भी नैतिक आचरण के देवता है। अग्नि के अनेक नेत्र है, जिससे सम्पूर्ण विष्व पर दृष्टिपात करते रहते हैं। उनके द्वारा सभी कर्म व्याप्त है , वे मनुष्य के कर्मोें को देखते है।

संस्कृत साहित्य में कई नैतिक मूल्यों का वर्णन किया गया है,जैसे सत्य,अहिंसा, दया, परोपकार ,क्षमा,इ्रमानदारी ,सम्मान और त्याग ये मूलय व्यक्ति के चरित्र निर्माण और सामाजिक कल्याण को बढावा देते है।

जैसे- रामायण में-श्रीराम का अपने चरित्र के माध्यम से मर्यादा और प्रजाहित जैसे मूल्यों का प्रदर्षन जहां वे प्रजा की भलाई के लिए व्यक्तिगत सुखों का त्याग करते है।

महाभारत-युधिष्ठिर का सत्य और न्याय के प्रति दृढ संकल्प और द्रौपदी का अपनी बात पर अढिग रहना।

विदुरनीति और चाणक्य नीति- इन ग्रन्थांे में जीवन के व्यवहारिक और नैतिक पहलुओं पर विस्तृत मार्गदर्षन दिया गया है।

पंचतंत्र- यह कथा संग्रह सरल कहानियों के माध्यम से जीवन के नैतिक मूल्यों जैसे कि लालच का फल बुरा होता है,को सिखाता है।

संस्कृत साहित्य में नैतिक मूल्यों से सम्बंधित कुछ महत्वपुर्ण ष्लोक जो मानवीय मूल्यों के विकास के लिए आवष्यक हैं-

दुःख्ेाष्वनुद्विग्रमनाः सुखेषु विगतस्पृह।

वीतारागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरूच्यते।।

जो त्रयतापों के होने पर भी मन में विचलित नही होता अथवा सुख में प्रसन्न नही होता और जो आसक्ति भय तथा क्रोध से मुक्त है,वह स्थिर मन वाला मुनि कहलाता है।

इन्द्रियजयस्य मलं वियम्।

इन्द्रिय जय का मूल विनय है।

जीतात्मा सर्वार्थे सन्युज्यते।

नियंत्रित व्यक्ति सभी अवगुणों से दूर और गुणों से युक्त होता है।

विद्या ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम्।

पात्रत्वाध्दनमाप्नोति धनाध्दर्म ततः सुखम्।।

विद्याा मनुष्य को नम्रता देती है,वह नम्रता से योग्यता,योग्यता से धन,धन से धर्म और धर्म से सुख प्राप्त करता है। अर्थात विद्या ही सब सुख की जड़ है।

हितोपदेश मित्रलाभ आचारः परमोःधर्मः श्रुत्युक्तः स्मार्त एव च।

तस्माद्स्मिन्सदा युक्तो नित्यं स्यादात्मवान्द्विजः।।

वेदों तथा स्मृतियों में कहा गया आचार ही श्रेष्ठ धर्म है,आत्महिताभिलाषी द्विज को इसमें प्रयत्नवान् होना चाहिए।

हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः।

जो बात भली और मीठी हो एंेसी बात दुर्लभ है।

श्रुतिःस्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनाः।

सम्यक्संकल्पजः कामो धर्ममूलमिदं स्मृतम्।।

श्रुति(वेद) स्मृति(धर्मषास्त्र) सदाचार(षिष्ट पुरूषों का आचार)अपने आत्मा को प्रिय कार्य तथा उचित संकल्प से उत्पन्न काम(इच्छा) यह धर्म का मूल माना गया है।

वच्यर्था नियताः सर्वे वाङमूला वाग्विनीः सृता।

तां तु यः स्तेनयेद्वाचं स सर्वस्तेयकृन्नरः।।

मनुष्यों के सब व्यवहार वाणी से हुआ करते है। एक के विचार दूसरों को बताने के लिए ष्षब्द के समान अन्य साधन नही है। वही सब व्यवहारों का आश्रय-स्थान और वाणी का मूल स्त्रोत है, जो मनुष्य उसको मलिन कर डालता है,अर्थात जो वाणी का प्रतारणा करता है, वह सब पूंजी ही की चोरी करता है।

जाढ्यं धियो हरति सिंचति वाचि सत्यम्।

मानोन्नतिं दिशति पापम् पा करोति।।

चेतः प्रमादयति दिक्षु तनोति कीर्तिम्।

सत्संगतिः कथय किं न करोति पंुषाम्।।

मूर्खता को हरती,वचनों में सत्य को खींचती प्रतिष्ठा को बढाती,पाप को दूर करती, चित् को प्रसन्न करती और दषों दिषाओं में कीर्ति को फैलाती है,कहो तो यह सत्संगति मनुष्य को क्या नहीं करती है।

नैतिक मूल्य एवं नैतिक षिक्षा से सम्बधिंत विचारों को उत्पन्न करने के लिए अनेक विचारकों ने कई धार्मिक व सामाजिक पुस्तकें अपने जीवन काल में लिखी ,आधुनिक भारत के चिन्तक तथा आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती ने भी कई धार्मिक व सामाजिक पुस्तकें लिखी -वैदिक यन्त्रालय बनारस द्वारा 1880 में व्यवहारभानु पुस्तक प्रकाषित की गई थी, इस पुस्तक में धर्मोक्त और उचित व्यवहार के बारे में वर्णन है। यदि ऋषि दयानंद सरस्वती के ग्रन्थों व विचारों पर चला जाए तो राष्ट्र पुनः विष्वगुरू,गौरवषाली,वैभवषाली,शक्तिषाली,सम्पन्नषाली,सदाचारी और महान बन जाए। बुध्द की षिक्षाओं में भी मुख्य रूप से चार आर्य सत्य और अष्टांगिक मार्गष्षामिल है, इन षिक्षाओं में नैतिक आचरण,षारीरिक और मानसिक अनुषासन और ज्ञान प्राप्त करने पर जोर दिया गया है। इसके अलावा बौध्द धर्म अहिंसा,सत्य,करूणा,संतोश और आत्म नियंत्रण के सिध्दांतों पर भी आधारित है।

निष्कर्षः- नैतिकता से, अनुषासन से और विनम्रता से स्वयं पर नियंत्रण होता है। धर्म अर्थ विरोधेनकामं सेवेत न निः सुखः स्यात। अर्थात धर्म और अर्थ के नियमों के अनुसार आचरण करना चाहिए, जो इनके विपरित चलता है उसे सुख नही मिलता। नैतिक मूल्य ही भारतीय संस्कृति का मूल है,जीवन को सत्यमार्ग पर ले जाने का कार्य मानव मूल्य करते है,व्यक्ति समाज में व्यवस्था,समता,और पवित्रता बनाये रखने के लिए जिन नियमों का विकास और पालन करता है वे सभी धर्म की सीमा में

परिगणित किये जाते हैं। समानता,न्याय,स्वतंत्रता,करूणा एवं बन्धुत्व की भावना ही नैतिक मूल्य है जिनका बोध कराने के लिए संस्कृत साहित्य में वैदिक काल से लेकर आज तक प्रयास किये जा रहे हैं।

संदर्भ ग्रन्थः- 1 मनुस्मृति-पण्डित श्री हरगोविंद षास्त्री चैखम्भा संस्कृत सीरीज आफिस वाराणसी।

2 किरातार्जुनीयम्-आचार्य ष्षेशराज ष्षर्मा रेग्मीकृतया-चैखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी।

3 याज्ञवल्क्यस्मृतिः-आचाराध्याय डाॅ. गङ्गासागरराय सर्वभारतीय काषिराजन्यास दुर्ग रामनगर वाराणसी चैखम्भा संस्कृत प्रतिष्ठान दिल्ली।

4 श्रीमद्भगवतगीतारहस्य अथवा कर्मयोगषास्त्र लो.बालगंगाधर तिलक दी.ज. तिलक षै.श्री.तिलक 568 नारायण पेठ लो.तिलक मंदिर(गायकवाड सदन)।

5 भर्तृहरि शतक रामजी ष्षर्मा मधुबनी महाशय ष्यामलाल वम्र्मा आर्य बुकसेलर बरेली।

6 श्रीमद्भगवतगीता यथा रूप द्वारा कृष्णकृपामूर्ति श्री श्रीमद् ए.सी. भक्तिवेदान्त स्वामी प्रभुपाद-भक्तिवेदान्त बुक ट्रस्ट।

7 चाणक्य नीति एवं कौटिल्य अर्थषास्त्र प्रो.श्रीकान्त प्रसून-वी.एण्ड.एस.पब्लिशर्स।